2019-2020

Name of the Department/Society: **हिंदी साहित्य परिषद्, हिंदी विभाग, हंसराज महाविद्यालय**
Name of the Event 5: हिंदी उपन्यास : संवेदना और शिल्प
Date of the Event: 20th February 2020

परामर्शदाता : डॉ. राजेश कुमार शर्मा

हंसराज महाविद्यालय, हिंदी विभाग, हिंदी साहित्य परिषद द्वारा संचालित 20 फरवरी 2020 को 'हिंदी उपन्यास : संवेदना और शिल्प' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसके मुख्य वक्ता प्रो. रोहिणी अग्रवाल तथा डॉ. विनोद तिवारी थे। हंसराज महाविद्यालय की प्राचार्य प्रो. रमा ने उपस्थित सभी अतिथियों का स्वागत संबोधन किया। तथा हिंदी उपन्यास के बारे में बताते हुए डॉ. विनोद तिवारी कहते हैं। हिंदी उपन्यास के बारे में यह आम धारणा है कि इसका विकास मात्र बीसवीं सदी की देन है किंतु यह सच है कि बीसवीं से पूर्व की एक लंबी साहित्य गाथा हमें आज भी अपने विविध रूपों में सतत विकसित होती हुई दिखाई देती है बीसवीं सदी में प्रेमचंद ने इस कथा –धारा को अपने समय के मनुष्यों से जोड़कर मजदूरों, किसानों को और समाज के मध्य वर्गीय चरित्रों को ही कुछ आदर्श और विशिष्ट का पर्याय बनाने का प्रयत्न किया जब प्रेमचंद के समकालीन जयशंकर प्रसाद जैसे महान रचनाकार ऐतिहासिक सांस्कृतिक बोध की स्थापना में उन्हीं पुरातन आदर्शों की खोज में संलग्न थे। ऐसे में 'बाजारे हुस्न' 'सेवासदन' 'प्रेमाश्रम' 'कर्मभूमि' जैसे उपन्यासों से हिंदी जगत में प्रवेश कर प्रेमचंद ने 'गोदान' जैसा उपन्यास लिखा। जिसे भारतीय किसान जीवन का महाकाव्य माना गया। तथा प्रो. रोहिणी अग्रवाल कहती हैं। आधुनिक युग में साहित्य की

विभिन्न विधाओं में उपन्यास का महत्वपूर्ण स्थान है। सर्जक अपने भावों और विचारों को प्रकट करने के लिए उपन्यास का सहारा लेते हैं। उपन्यास केवल मनोरंजन का साधन या कल्पित गद्य कथा मात्र नहीं – बल्कि मानव जीवन का ऐसा गद्य है जिसमें मनुष्य को समग्रता से समझने और अभिव्यक्त करने का प्रयास किया जाता है। कार्यक्रम का संचालन हंसराज महाविद्यालय के प्राध्यापक डॉ.मनीष कुमार शर्मा ने किया था। तथा धन्यवाद ज्ञापन डॉ. राजेश कुमार शर्मा ने किया।